(1)

Lecture Series No:- 59.

Online class.
Date. 31/5/2020
Time - 10 to 10:30 AM

Topic,

(1) Maya and Jagat,

Dr. Suzita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A part - I
paper - I (H.)
A. H. D. college shahpur
Patory, Samastipur,

Ans:-

शंकर ने माया और अविद्या का प्रयोग समानार्थक रूप में किया है। लेकिन परवर्ती दार्शनिकों ने इन दोनों में कुछ भेद किया है। परमेश्वर की बीच शक्ति का नाम माया है। जिस प्रकार दहकना अग्नि की शक्ति है। उसी प्रकार माया ब्रह्म का स्वरूप नहीं,

शक्ति का माया है। माया न तो सत् है और नहीं असत् बल्कि इन दोनों से विलक्षण होने के कारण उसे अनिर्वचनीय कहा गया है। जगत के पदार्थ का रूप दो प्रकार का होता है — सत् और असत्।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

सत् उसे कहते हैं, जो हमेशा एक ही प्रकार का होता है और किसी ज्ञान से भी उसका विरोध न हो। लेकिन यदि अन्य ज्ञान के द्वारा पूर्ववस्तु बाधित हो जाती है तो उसे असत् कहा जाता है।

माया के संबंध में यह दो प्रकार का मत असंगत है। माया को सत् कैसे माना जाए।

क्योंकि ब्रह्म ज्ञान होने पर माया का ज्ञान बाधित हो जाता है, यदि माया सत् होती तो वह कभी बाधित नहीं होती। प्रश्न उठता है कि तब माया असत् कही कही जाए?

लेकिन यह पक्ष भी ठीक नहीं है, चूंकि उस पदार्थ (सत्ता) की प्रतीति नहीं होती लेकिन माया की

P.T.O.

Scanned with CamScanner

प्रतीति में होने (आवश्यक) आवश्य होती है

अतः! माया को असत् भी नही कहा जा सकता है। उपर्युक्त विवरण के आधार पर न तो माया पूर्णतः सत है और न पूर्णतः असत्।

इसलिए माया को अनिर्वचनीय कहा गया है।

तर्क की सहायता से माया का ज्ञान प्राप्त करना, अंधकार की सहायता से अंधकार का ज्ञान प्राप्त करना है। सूर्योदयकाल में अंधकार और भक्ति ज्ञान

के उदाहरण स्वरूप कहा जा सकता है! :)

उदयकाल में माया टिक नही सकती इसलिए कहा गया है — " यह भ्रांति अवलंबनहीन तथा सब न्याय से नितांत विरोधनी है, जिस प्रकार अंधकार सूर्य को नही सह सकती सकता उसी प्रकार विचार को नही सह सकती।" etc.

END